

#### श्रसाधारण

## EXTRAORDINARY

भाग II---खण्ड 3---उपखण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (1)

प्राधिकार से प्रकाशित

### PUBLISHED BY AUTHORITY

ਸਾਂ੦ 138] No. 138] नई बिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 31, 1970/श्रावण 9, 1892 NEW DELHI, FRIDAY, JULY 31, 1970/SRAVANA 9, 1892

इस भाग में भिन्न पुष्ठ संक्या वी जाती है जिससे कि यह बलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

#### MINISTRY OF HOME AFFAIRS

#### NOTIFICATION

New Delhi, the 31st July 1970

G.S.R. 1119.—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of section 6 of the Bengal Finance (Sales Tex) Act, 1941 (Bengal Act 6 of 1941), as in force in the Union territory of Delhi, the Central Government hereby makes with effect from the 1st August, 1970 the following further amendments in the Second Schedule to the said Act, the same having been previously published in the Gazette of India Extraordinary as G.S.R. 1038 dated the 14th July, 1970 as required by the said sub-section, namely:—

In the said Schedule, for item No. 17, the following item and the Explanation shall be substituted, namely:—

"17. All varieties of cotton fabrics, rayon or artificial silk fabrics and woollen fabrics but not including durries, druggets and carpets.

Explanation.—The expressions "cotton fabrics", "rayon or artificial silk fabrics" and "Woollen fabrics" shall have the same meaning as are, respectively assigned to them in the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944)."

[No. F. 16/22/69-UTL.]

K. R. PRABHU, Jt. Secy.

## गृह मंत्रालय

# ग्रधिसूचना

# नर्द दिल्ली, 31 जुलाई 1970

सा० का० निव-119—दिन्ती के संघ राज्यक्षेत्र में यथा प्रवृत्त बंगाल वित्त (विक्रय कर) प्रधिनियम, 1941 (1941 का बंगाल श्रिधिनियम 6) की धारा 6 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त णिक्तयों का प्रयोग करने हुए केन्द्रीय सरकार एनद्द्वारा उक्त श्रिधिनियम की द्वितीय श्रनुसूची में 1 अगस्त, 1970 से श्रीर श्रागे निम्नलिखित संशोधन करती है, जो उक्त उपधारा द्वारा यथा श्रिपेक्षित भारत के राजपत्त, श्रमाधारण नारीख 14 जुलाई, 1970 में सा० का० नि० 1038 के रूप में पूर्व प्रकाणित हो चुकी है, श्रथात् :—

उक्त श्रनुसूची में मद मं० 17 के स्थान पर निम्नलिखित मद और स्पण्टीकरण प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :---

> "17. सभी प्रकार के सूनी फैंब्रिक, रेयन या कृतिम रेणमी फैंब्रिक भीर ऊनी फैंब्रिक किन्तु इसके ग्रन्तर्गत दिख्यां, इगेट श्रार कालीन नहीं हैं।"

स्प.टीकरएा :--"मूती फैक्कि" "रेयन या कृतिम रेणमी फैक्कि" श्रीर "ऊनी फैक्कि" का वही अर्थ होगा जो केन्द्रीय उत्पादणुक्क श्रीर नमक श्रिधिनियम, 1944(1944 का 1) से उन्हें ऋमणः विए गए है।"

[सं० फा० 16/22/68—यू टी एल] हस्ताक्षर के० ग्रार० प्रभृ, मंयुक्त सचिव।